इकाई–7 : भूषण

संरचना

7.0 कवि परिचय

7.1 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

7.2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

7.2.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

7.2.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

7.2.3 निबंधात्मक प्रश्न

7.3 सारांश

7.4 अभ्यास प्रश्नावली

7.0 कवि परिचय

महाकवि भूषण का जन्म सं. 1670 वि. में उत्तर प्रदेश के तिकवांपुर (त्रिविक्रमपुर) गाँव में हुआ था। इनके पिताश्री का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। वैसे इनके वास्तविक नाम का आजतक किसी को पता नहीं है। भूषण तो एक उपाधि है जो चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद्र ने उन्हें प्रदान की थी। इनके द्वारा विरचित ग्रन्थ शिवराज भूषण में लिखा है कि –

'देसनि देसनि ते गुनी आवत जाँचन ताहि।
तिनमें आयौ एक कवि, भूषण कहिये जाहि।।'

भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल की प्रशस्ति में कविताओं का सृजन किया है और दोनों के द्वारा ही इनको भरपूर सम्मान मिला है। दोनों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कवि ने कहा है –

'शिवा को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को।'

हृदयराम सोलंकी, साहूजी, बाजीराव, जयसिंह का आश्रय भी उन्होंने प्राप्त किया था किन्तु भूषण के मनोनुकूल आश्रयदाता केवल दो ही थे महाराज शिवाजी और वीर केसरी छत्रसाल। ऐसा कहा जाता है कि जब ये विदा होने लगे तो महाराज छत्रसाल ने इनकी पालकी में कंधा लगाया था। कवि भूषण ने शिवा–बावनी, छत्रसाल दशक, भूषण–हजारा, भूषण–उल्लास आदि प्रसिद्ध कृतियाँ लिखीं। शिवराज भूषण में इनकी प्रायः सभी रचनाएँ मिल जाती हैं।

यद्यपि रीतिकाल श्रृंगार युग था किन्तु भूषण ने उस युग के प्रभाव से अलग हटकर वीररस की कृतियां तैयार की। परम्परा पर कठोर प्रकार किया। वैसे उन्होंने श्रृंगार रस के पद भी लिखे किन्तु उनका मन वीररस की रचनाओं में ही अधिक रमा।

भूषण का काव्य ओजगुण से समन्वित है। भाषा पर उनका असाधारण अधिकार रहा है। उन्होंने वीर रसानुकूल भाषा को अपनाकर अपनी क्षमता का उपयोग सजीव बिम्बों के निर्माण में किया है। भूषण रीतिबद्ध कवि थे तथा दुर्गा व विद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती की एक साथ आराधना करने में निरत रहें। उनकी कविताएँ जन–जन के कण्ठ का सुरीला हार बन गई।

कुछ लोगों का कहना है कि उनकी कविताओं में साम्प्रदायिकता की बू आती है किन्तु यह आरोप पूर्णतः निराधार है, वे तो उदार प्रवृत्ति के थे और मानवीय गुणों का सम्मान करते थे। अपने पिता को कैद करने वाले औरंगजेब को उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि उसने उनकी पवित्र मर्यादाओं का उल्लंघन कर ऐसा कार्य किया है मानों मक्का में आग लगा दी हो –

'किबले के ठौर बाप बादशाह शाहजहाँ,
ताको कैद कीन्हों मानो मक्के आग लगाई है।'

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है कि भूषण भारत की राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक कवि रहे हैं। उनकी वाणी आज भी देश की सुषुप्त चेतना को जगाने में सक्षम है।

भूषण की रचनाएँ ब्रज भाषा में है किन्तु अनेक विदेशी शब्दों का भी खुलकर उपयोग किया है। इतना ही नहीं, भाषा में शब्दों का तोड़–मरोड़ भी पर्याप्त मात्रा में किया गया है साथ ही व्याकरण के नियमों का उल्लंघन भी पर्याप्त मात्रा में किया है वैसे भाषा में वीर भावना का समावेश है।

7.1 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(शिवाजी शौर्य से चयनित अंश)

(1)

देखत ऊँचाई उघरत पाग, सूधी राह
द्योंसहुं मैं चढैते जो साहस निकेत हैं।
शिवाजी हुकुम तेरो पाय पैदलन सल
हेरी, परनालो ते वै जीते जने खेत हैं।।
सावन भादौ को भारी कुहुँ की अँध्यारी चढ़ि।
दुग्ग पर जात मावलीदल सचेत हैं।
'भूषण' भनत ताकी बात मैं विचारी तेरे
परताप–रवि की उन्यारी गढ लेत हैं।।

शब्दार्थ – उघरत = खुल जाती है, द्योंसहूँ = दिन में ही, निकेत = घर, पैदलन = पैदल सेना, कुहु = रात्रि, दुग्ग = दुर्ग, माबलोदल = संगठित सेना, परताप = प्रताप।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी के 'भूषण' नामक पाठ से अवतरित है। यह अंश कवि भूषण द्वारा विरचित 'शिवा–बावनी' नामक काव्य से संकलित 'शिवा–शौर्य' प्रसंग से लिया गया है। जिसमें कवि ने महाराज शिवाजी की वीरता और यश का वर्णन किया है। शिवाजी ने अल्पकाल में अनेक दुर्ग बनवाये। शिवाजी के नाम से ही सारे शत्रु काँप उठते हैं उनका शौर्य व प्रताप सूर्य की भाँति दैदीप्यमान था।

व्याख्या – कवि भूषण वीर शिवाजी द्वारा निर्मित दुर्गों की विशालता का वर्णन करते हुए कहते हैं। जो कोई भी दुर्ग को देखता है उसकी पगड़ी गिर जाती है क्योंकि दुर्गों की ऊँचाई अधिक है। वे सभी दुर्ग शिवाजी के आवास है। इनमें आम रास्तों द्वारा केवल दिन में ही प्रवेश किया जा सकता है। रात में उन दुर्गों की चढ़ाई संभव नहीं है। शिवाजी की आशा पाकर पैदन सेना शत्रुओं पर आक्रमण कर डालती है तथा सैनिकों की विशषता यह है कि वे बड़े–बड़े नालों और नदियों को खेतों–खलिहानों की तरह सुगमता से पार कर जाते हैं। कवि भूषण कहते हैं कि सावन और भादों की घनघोर रातों में उनकी सेना बड़ी सावधानी से दुर्ग पर चढ़ती है। इसी विशेषता के कारण भूषण कहते हैं कि हे सरजा शिवाजी! मैं तुम्हारे प्रताप रूपी सूर्य के प्रकाश में तुम्हारी कविताओं का सृजन करता हूँ।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में स्पष्ट किया है कि अन्धेरी रातों में भी वीर शिवाजी के वीर सैनिक बड़ी आसानी से दुर्ग पर चढ़कर पूर्ण कुशलता के साथ अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकते हैं क्योंकि रात के अँधियारे में शिवाजी के प्रताप का प्रकाश सम्पूर्ण अन्धकार का शमन कर देता है।
2. स्वयं कवि भूषण भी शिवाजी के प्रताप रूपी प्रकाश में कविताओं का सृजन करते हैं।
3. प्रस्तुत अंश में कवि भूषण ने शिवाजी के तेज और ओजस्विता को व्यक्त किया है।
4. अनुप्रास और काव्य लिंग अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(2)

पूरब के उत्तर के प्रबल पछाँह हू के
सब पातसाहीन के गढ कोट हरते।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

'भूषण कहै' यों अबरंग सो वजीर जीति
लोबे को पुरतगाल सागर उतरते।।
सरजा सिवा पर पठावत मुहीम काज
हजरत हम मरिबे को नाहिं डरते।
चाकर है उजर कियौ न जाय नैक पै,
कछु दिन उबरते तो घने काज करते।।

शब्दार्थ – प्रबल = बलशाली, पातसाहन = राजाओं, अबरंग = औरंगजेब, जीतलीबे = जीत लिये, पठावत = भेजते हैं, मुहीम काज = बादशाही आदेश, हजरत = सेवक का पूज्य, उजर = विरोध, उबरते = चुपचाप रहते, घने = अधिक।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण पाठ्य पुस्तक रीति–रस तरंगिणी के भूषण द्वारा विरचित 'शिवा शौर्य' प्रसंग से अवतरित है जिसमें कवि ने अपनी आस्थानुसार शिवाजी की वीरता और प्रताप का सुन्दर वर्णन किया है।

व्याख्या – कवि भूषण वीर शिवाजी के प्रताप व उनकी वीरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यदि शिवाजी को अवसर मिलता तो वे भारत के पूरब, उत्तर और पश्चिम के बड़े–बड़े सभी राजाओं के सभी किलों और गढ़ों को जीत लेते। औरंगजेब का वजीर कहता है कि यदि शिवाजी को नहीं रोका गया तो भारत के ही नहीं बल्कि विदेशी राजाओं पर भी आक्रमण कर देंगे। वे पुर्तगाल को जीतने के लिए समुद्र में भी उतर सकते हैं। यदि शिवाजी के विरूद्ध बादशाह के कार्यों को साधने के लिये भेजा जाता है तो हम मरने से नहीं डरते हैं क्योंकि हम आपके सेवक हैं और आपके आदेश का विरोध नहीं कर सकते हैं किन्तु हमारा एक निवेदन है कि यदि हम कुछ दिनों तक शिवाजी का विरोध नहीं करते या कुछ दिन सकुशल निकल जाते तो हमें काफी राहत मिल जाती और हम अपने अन्य कई काम आसानी से कर सकते।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में मुगल बादशाह की विवशता का सुन्दर चित्रण किया है।
2. प्रस्तुत अंश में शिवाजी के प्रताप और शत्रु भय की स्थिति स्पष्ट होती है।
3. कवि ने संवाद शैली में नायक प्रतिनायक के भावों का सुन्दर चित्रण किया है।
4. अवतरण में अनुप्रारा और अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(3)

साजि चतुरंग सेन अंग में उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
'भूषण' भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी–नद मद गैवरन के रलत है।।
ऐल फैल खैल खलक मैं गैल–गैल,
गजन की हेल–पेल सैल उलसत है।
तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत जिमि,
थारा पर फरा पाराबार यों हालत है।।

शब्दार्थ – साजि = सजाकर, चतुरंग = चार प्रकार की सेना, उमंग = जोश या उत्साह, विहद = तीव्र, गैबरन = हाथियों, जंग = युद्ध, सैल = पर्वत, उलसत है = उखड़ते हैं, तरनि = सूर्य, थारा = थाल, पारावार = सागर।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक रीति–रस तरंगिणी के भूषण द्वारा विरचित 'शिवा शौर्य' प्रसंग से उद्धृत है जिसमें कवि ने वीर शिवा की विजय यात्रा और विशाल सेना का चमत्कारी वर्णन प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – भूषण कवि वीर शिवाजी की विजय यात्रा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब शिवाजी अपनी चतुरंगी सेना को सजा संवारकर तथा अपने घोडे पर सवार होकर पूर्ण उत्साह के साथ शत्रुओं से युद्ध जीतने चलते हैं तो उस समय की शोभा अत्यन्त चमत्कारिक प्रतीत होती है। युद्ध के लिये प्रस्थान करते समय नगाड़ों की तीव्र आवाज चारों ओर गूंजने लगती है और उनके हाथियों की मद धारा के आगे बड़े–बड़े नदी और नाले बह जाते हैं अर्थात् हजारों

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हाथियों से युक्त उनकी सेना है जिनके गण्डस्थल से प्रवाहित होने वाली मद–धारा बड़ी–बड़ी नदियों के प्रवाह के समान लगती है। सेना के हाथी–घोड़े और पैदल भीड़ के कारण वे आपस में टकराते हुए चलते है और उनमे खलबली मची रहती है तथा गली–गली में उनकी सेना के शब्द गूँजते रहते हैं। उनकी सेना के हाथियों के झमेले से बड़े–बड़े पहाड भी उखडने लगते हैं। पैदल सैनिकों की धूल के कारण सूर्य भी तारे की भाँति दिखाई देने लगता है अर्थात् सेना के चलते सम्पूर्ण वातावरण धूल–धूसरित हो जाता है। सारी पृथ्वी पर खलबली मच जाती है और सागर थाली में भरे हुए पानी की तरह हिलने लगता है।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में कवि ने कल्पना के चमत्कार के साथ अतिशयोक्ति का प्रयोग किया है।
2. कवि ने शिवाजी के ओज का वर्णन किया है।
3. अनुप्रास, यमक, पुररूक्ति प्रकाश और वीप्सा अलंकार का प्रयोग किया गया है।
4. अंतिम दो पंक्तियों में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
5. मनहरण कवित्त की गेयता, पद मैत्री, नाद सौन्दर्य और भावाभिव्यक्ति अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।

(4)

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।
कन्द मूल भोग करैं कन्द मूल भोग करैं,
तीन बेर खातीं ते वै तीनि बेर खाती हैं।।
'भूषण' सिथिल अंग, भूषण सिथिल अंग,
विजन डुलाती ते वै विजन डुलाती हैं।
'भूषण' भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वैं नगन जड़ाती है।।

शब्दार्थ – मन्दर = भवन, गुफा, घोर = भयंकर, विशाल, कन्दमूल = मेवे–फल, पेड़–पौधों की जड, बेर = बार, बेर फल, तिजग = पंखा, सुनसान, नगन = नगीने, नग्न, जड़ाती है = जड्वाती है, जाड़े में ठिठुरती है।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक रीति–रस तरंगिणी के भूषण द्वारा विरचित 'शिवाजी–शौर्य' प्रसंग से अवतरित है जिसमें शिवाजी की प्रशस्ति करते हुए उनके शौर्य का वर्णन किया गया है तथा शत्रु पक्ष की दुर्दशा का सुन्दर चित्र उभारा है।

व्याख्या – कवि भूषण वीर शिवाजी के शौर्य और शत्रु पक्ष की दयनीयता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि छत्रपति शिवाजी के भय के कारण शत्रु पक्ष की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है। पहले शत्रुओं की स्त्रियाँ ऊँचे–ऊँचे महलों में निवास करती थी और अब वे भय के कारण ऊँचे पर्वतों की गुफाओं में रहने लगी हैं। जो स्त्रियाँ पहले मीठे पकवान खाया करती हैं अब वे ही स्त्रियाँ जंगलों में भटकती हुई पेड–पौधों की जड़ें खा–पीकर गुजर करती हैं। जो स्त्रियां पहले दिन में तीन बार भोजन किया करती थी वे अब बेर की झाड़ियों से चुन–चुनकर तीन बेर फलों से अपनी क्षुधा पूर्ति करने के लिये विवश हैं। पहले उनके शरीर के अंग आभूषणों से लदे रहने के कारण शिथिल रहते थे किन्तु अब भूख की पीड़ा के कारण उनके अंग शिथिल हो गये हैं। जो शत्रु स्त्रियां पहले राज महलों में रहकर एक दूसरे से पंखे डुलवाती थीं किन्तु अब वे निर्जन जंगलों में अकेली भटकती रहती हैं। जो शत्रु रमणियाँ पहले हीरे–मोतियों से जर्क–वर्क रहती थीं वे अब शिवाजी के भय से अपने राज महलों से पलायन कर जंगलों में अर्द्ध नग्न शरीर से जाड़े में ठिठुरती रहती हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत अंश में शिवाजी के पराक्रम का अतिशय वर्णन किया गया है।
2. शत्रु पक्ष के भय का सुन्दर चित्रण किया है।
3. यमक अलंकार का चमत्कार दृष्टव्य है।
4. कवित्त छन्द की पद योजना, गेयता और प्रभावोत्पादकता के साथ चित्रात्मकता प्रशंसनीय है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(5)

सवन के ऊपर ही ठाड़ो रहिवे के जोग,
ताहि खरो कियौ पंज–जारिन के नियरे।
जानि गैर मिसिल गुसैल गुसा धारि उर,
कीन्हों न सलाम,न वचन बोले सियरे।।
'भूषण' भनत महावीर बलकन लाग्यो,
सारी पातसाही के उडाय गये जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भरे,
स्याह मुख नौरंग, सिपाह–मुख पियरे।।

शब्दार्थ – गैर मिसिल = दूसरों की मिसिल, दूसरों के क्षेत्रों के कागजात, गुसैल = क्रोधी, गुसा = क्रोध, उर = हृदय, सियरे = शीतल, विनम्र, बलकन = जोश में बोलने, जियरे = हृदय, जीवात्मा, स्याह = काला, पियरे = पीले।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक रीति–रस तरंगिणी के भूषण द्वारा विरचित 'शिवा–शौर्य' से लिया गया है। इसमें कवि ने शिवाजी के पराक्रम और शत्रु पक्ष द्वारा उनसे सदैव भयभीत रहने की स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – कवि भूषण छत्रपति शिवाजी के शौर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वे सभी भारतीय राजाओं के ऊपर रहने वाले अर्थात् सभी पर अपने शौर्य का प्रभाव रखने वाले और अग्रगण्य हैं। किन्तु मुगल बादशाह औरंगजेब ने जब उन्हें अपने दरबार में बुलाकर अधीनस्थ छोटे राजाओं के साथ खड़ा रहने को कहा गया तो शिवाजी को अत्यन्त क्रोध आया। दूसरे के क्षेत्र के माप आदि के कागजों की तरह स्वयं को दूसरों के अधीन समझकर उनको क्रोध आना स्वाभाविक था। इसी वजह से शिवाजी ने औरंगजेब को न तो सलाम किया और न किसी प्रकार के प्रिय वचन ही कहे। अर्थात् शिवाजी अत्यन्त क्रोध में थे।

कविवर भूषण कहते हैं कि उस समय अवसर मिलते ही पराक्रमी शिवाजी जोश में आकर कहने लगे। उस क्षण उनकी ओजस्विता को देखकर औरंगजेब के सभी दरबारी योद्धा काँपने लगे तथा उनके हृदय अस्थिर हो गये। क्रोध के कारण लाल मुख वाले छत्रपति शिवाजी को देखकर भरे दरबार में ही औरंगजेब का चेहरा काला पड़ गया और वहाँ पर उपस्थित मुगल योद्धाओं के चेहरे काले–पीले पड़ गये। अर्थात् शिवाजी के क्रोध को देखकर मुगलों को उनके शौर्य का स्मरण हो आया और वे भयभीत हो गये।

विशेष

1. प्रस्तुत अंश में भूषण ने छत्रपति शिवाजी के पहुँचने पर औरंगजेब दरबार की घटना का वर्णन किया है।
2. अनुप्रास और काव्यलिंग अलंकार का प्रयोग किया गया है।
3. कवित्त छन्द की पद योजना प्रशंस्य है।

(6)

बेद राखे विदित पुरान राखे सार युत,
रामनाम राख्यो अति रसना सुघर मैं।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर मैं।।
मीडि राखे मुगल मरोरि राखे पातशाह,
बैरी पीसि राखे वरदान राख्यो कर मैं।
राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर मैं।।

शब्दार्थ – विदित = ज्ञात, रसना = जीभ, सुघर = मजबूत, सुन्दर, मीडि राखे = दबाकर रखे, वरदान = श्रेष्ठ दान, हद्द = सीमा या मर्यादा, तेगबल = तलवार के बल पर, देवल = मन्दिर।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग – कविवर भूषण छत्रपति शिवाजी के गुणगान में कहते हैं कि शिवाजी की तलवार ने वेदों को सदैव प्रकट रखा और पुराणों की ख्याति को कायम रखा। अर्थात् अपने शौर्य से धर्म विरोधियों का विरोधकर वेदों और पुराणों की सुरक्षा की तथा हिन्दुओं में उनका प्रसार–प्रचार किया। उन्होंने भगवान राम के नाम को हर व्यक्ति की जिह्वा प बनाये रखा और राम नाम के प्रति आस्था को कायम रखा। उन्होंने हिन्दुओं की चोटी और सैनिकों की जीविका को बचाया और हिन्दुओं के कन्धे पर जनेऊ और गले की माला की सुरक्षा की अर्थात् शिवाजी ने मुगलों के आतंक से हिन्दु धर्म की रक्षा की। उन्होंने मुगलों को दबाकर रखा तथा मुगल सम्राट को और उसके अहंकार को चूर–चूर करके रखा। अपने शत्रुओं को पीसकर रखा तथा अपने हाथों में श्रेष्ठ दान देने की क्षमता को बनाये रखा। शिवाजी ने अपनी तलवार के बल पर हिन्दु राजाओं की सीमा एवं मर्यादा की रक्षा की। मन्दिरों में देव मूर्तियों को हिन्दु धर्म के विरोधियों से सुरक्षित रखा और अपनी मातृभूमि के धर्म की रक्षा की।

विशेष

1. प्रस्तुत पद्यावतरण में ऐतिहासिक सत्य को उभारा है।
2. शिवाजी ने मुगलों की क्षुद्र नीति का विरोध किया और हिन्दु धर्म की रक्षा की।
3. प्रस्तुत अंश में शिवाजी की धर्मवीरता का चित्रण किया गया है।
4. कवित्त छन्द की पद योजना प्रशंसनीय है।

(7)

गरुड को दाबा सदा नाग के समूह पर,
दाबा नाग–जूह पर सिंह सिर ताज को।
दाबा पुरहूत को पहारन के कुल पर,
पच्छिन के गील पर दाबा सदा बाज को।।
'भूषण' अखण्ड नव खण्ड महि मण्डल में,
तम पर दाबा रवि–किरन–समाज को।
पूरब पछाँह देस दच्छिन ते उत्तर लौ,
जहाँ पातसाही तहाँ दाबा सिव राज को।।

शब्दार्थ – दावा = प्रभुत्व, आधिपत्य, सिरताज = पराक्रमी, पुरहूत = इन्द्र, गोल = झुण्ड, अखण्ड = एक, नव खण्ड = द्वीप, तम = अन्धकार, पछाँह = पश्चिम, पातसाही = बादशाही।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी के 'भूषण' नामक पाठ से अवतरित है, जिसमें कवि ने छत्रपति शिवाजी के प्रभाव का चमत्कारपूर्ण चित्रण किया है और उनके पराक्रम की व्यापकता विभिन्न उपमानों के माध्यम से की है।

व्याख्या – कविवर भूषण वीर शिवाजी के प्रभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार पक्षिराज गरुड का प्रभुत्व सदैव सर्पों पर रहता है और सिंह का प्रभाव हाथी समूह पर होता है। इन्द्र का प्रभाव पर्वतों के कुल पर माना जाता है। देवराज इन्द्र ने पर्वतों के पंख काट कर उन्हें निश्चेष्ट कर दिया था और सभी पक्षियों के समूह पर हमेशा बाज का अधिकार रहता है।

कवि भूषण कहते हैं कि अखण्ड नव खण्ड (नौ भागों में द्वीपों में विभक्त) पृथ्वी में व्याप्त अन्धकार पर सूर्य की किरणों का आधिपत्य रहता है तथा पूर्व से पश्चिम तक दक्षिण से उत्तर तक सभी राज्यों में जहाँ–जहाँ पर मुगलों की बादशाही है, वहाँ–वहाँ छत्रपति शिवाजी का आधिपत्य है।

विशेष

1. प्रस्तुत अंश में छत्रपति शिवाजी के विरत्व को स्पष्ट किया है।
2. शिवाजी के प्रभुत्व की विरत्व को कवि ने विभिन्न उपमानों से प्रकट किया है।
3. प्रस्तुत अंश में निदर्शना, यमक और पुररुक्ति प्रकाश अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया गया है।
4. मनहरण कवित्त छन्द की पद योजना प्रशंसनीय है।
5. 'बादशाही' शब्द से कवि का अभिप्राय मुगलों का साम्राज्य है जिसे शिवाजी हस्तगत करने में समर्थ हैं।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

छत्रसाल प्रताप

(8)

भुज भुजगेस की वै संगिनी–सी,
खोदि–खोदि खाती दीन दारुन दलन के।
पखतर पाखरनि बीच धंसि जाति मौन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।।
रैया राय चम्पति को छत्रसाल महाराज,
'भूषण' सकत को बखानियों बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परै पर छीने वीर,
तेरी बरछी ने बर छीने है खलन के।।

शब्दार्थ – भुजगेस = नागराज, भुजंगिनी = नागिन, बखतर = कवच, मीन = मछली, पैरि = प्रविष्ट होकर, पारजात = पार जाती है, परवाह = जल प्रवाह, पच्छी = पक्षी, परछीने = पंख काटे, खलन = दुष्टों का।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस' तरंगिणी के कवि भूषण द्वारा विरचित 'छत्रसाल प्रताप' से अवतरित है, जिसमें कवि ने महाराज छत्रसाल के पराक्रम का गुणगान किया है।

व्याख्या – कविवर भूषण कहते हैं कि रैयाराव चंपतिराव के सुपुत्र महाराज छत्रसाल! आपकी बरछी तो भुजा रूपी सर्पराज की संगिनी सर्पिणी के समान रहती है और यह बर्छी रूपी भयानक नागिन शत्रुओं को निरन्तर डँसती रहती है। वह शत्रुओं के कवच और पाखरियों में इस प्रकार धँस जाती है जैसे मछली जल की प्रबल धारा को चीरकर उसमें प्रवेश कर जाती है। अर्थात् आपकी बर्छी सर्पिणी की तरह विषाक्त और मछली की भांति तीव्र है जो शत्रुओं को समूल नष्ट करने में सक्षम है।

कवि भूषण कहते हैं कि हे महाराज छत्रसाल! आपके शौर्य का वर्णन नहीं किया जा सकता है। आपकी बर्छी ने शत्रुओं के बल को ऐसा नष्ट किया है कि उनके योद्धा परकटे पक्षी की तरह फड़फड़ाते हुए धराशायी हो गये हैं। इस प्रकार आपकी पराक्रमी बर्छी ने शत्रु समूह को परास्त कर दिया है।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में वीरगाथाकालीन चारण कवियों की अभिव्यक्ति का स्वर मुखरित हुआ है।
2. कवि की वीर भावना अभिव्यक्त हुई है।
3. अंश में अनुप्रास और यमक अलंकार है।
4. कवित्त छन्दानुकूल पद योजना और नाद सौन्दर्य है।

(9)

चाक चक चमू के अचाकचक चहुँ ओर,
चाक सी फिरती धाक चम्पति के लाल की।
'भूषण' मनत पातसाही मारि जेर कीन्ही,
काहु उमराव न करेरी करवाल की।।
सुनि सुनि रीति बिरदैत के बडप्पन की,
थप्पन उथापन की बानि छत्रसाल की।
जंग जीति लेवा ते वै व्है के दाम देवा भूप,
सेवा लागे करन महेबा महिपाल की।।

शब्दार्थ – चमू = सेना, चाक = कुम्हार का चाक, अचाक = अचानक, जेर कीन्ही = ज्यादतियाँ की, करबाल = तलवार, बिरदैत = यशोगान, थप्पन = ओजस्वी, उथप्पन = उद्घोषणा, जंग = युद्ध, महेबा महिपाल = महेबा के राजा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के भूषण द्वारा विरचित 'छत्रसाल प्रताप' नामक शीर्षक से अवतरित है, जिसमें कवि ने महाराज छत्रसाल की वीरता और पराक्रम का ओजस्वी वर्णन किया है।

व्याख्या – कविवर भूषण महाराज छत्रसाल की वीरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि महाराज की धाक चारों ओर कुम्हार के चाक की भाँति निरन्तर घूमती रहती है। उनकी सेना के द्वारा शत्रुओं पर अचानक आक्रमण किया जाता है। जिसकी वजह से शत्रु पक्ष की सेना अचम्भे में पड़ जाती है। कवि भूषण कहते हैं कि जब बादशाह औरंगजेब ने अन्य छोटे–छोटे राजाओं के साथ ज्यादतियाँ की तब किसी भी वीर राजा ने उसके विरूद्ध तलवार नहीं उठाई, केवल छत्रसाल ने ही मुगल सम्राट का विरोध किया था। जब अन्य राजाओं ने महाराज छत्रसाल की वीरता का यशोगान सुना तो वे भी उनके आज्ञाकारी बन गये। वे सभी बादशाह मुगल सेना के विरूद्ध होकर महाराज छत्रसाल के समर्थक बन गये। महोबा के राजा अर्थात् चम्पतिराव के पुत्र छत्रसाल की सेवा करने लगे। मुगल साम्राज्य के आक्रमणों से भयभीत छोटे–छोटे तथा उमराव महाराज छत्रसाल की शरण में आ गये।

विशेष

1. प्ररतुत अवतरण में महाराज छत्ररााल की वीरता और युद्ध कौशल का चमत्कारी वर्णन किया गया है।
2. अनुप्रास, यमक, वीप्सा, पुनरुक्तिप्रकाश आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
3. कवि की राजनिष्ठ भक्ति स्पष्ट हुई है।
4. मनहरण कवित्त छन्द की पद मैत्री व गेयता तथा नाद–सौन्दर्य प्रशंसनीय है।

(10)

राजत अखण्ड तेज छाजत सुजस बड़ो,
गायत गयंद दिग्गजन हिय साल को।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत,
ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को।।
साजि सजि गज तुरी, पैदर कतार दीन्हें,
भूषण भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को।
और राव राजा एक मन में न ल्याऊं अब,
साहू को सराहौं के सराहौं छत्रसाल को।।

शब्दार्थ – राजत = शोभायमान, छाजत = छा जाता है, गाजत = गर्जना करते हैं, आफताब = सूर्य, ताप = गर्मी, अहंकार, तुरि = घोडे, पैदर = पैदल सेना, प्रतिपाल = रक्षक, गयन्द = हाथी, हिय = हृदय, साल = सालना, व्यथित करना।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति–रस तरंगिणी' के भूषण द्वारा विरचित 'छत्रसाल प्रताप' शीर्षक से लिया गया है, जिसमें कवि भूषण ने महाराज छत्रसाल के पराक्रम, यश और उनकी दानवीरता का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या – कवि भूषण महाराज छत्रसाल की वीरता का यशोगान करते हुए कहते हैं कि हे महाराज! आपका तेज अखण्डित होता हुआ शोभायमान लग रहा है और आप दिग्गजों के हृदय को व्यथित करने हेतु गर्जते रहते हैं। आपके तेज और पराक्रम के सामने सूर्य भी मलिन हो जाता है आपका शौर्य देखकर दुष्ट शत्रु अपने अहंकार को त्यागकर ब्राह्मणों का पूरा–पूरा ख्याल रखते हैं। आपने पैदल सैनिकों, हाथियों और घोड़ों की सेना सजाकर दुष्टों का दलन किया है और गरीबों को दानादि से उनकी सहायता की है।

कवि भूषण कहते हैं कि गरीबों का ऐसा मसीहा और आश्रयदाता आपके सिवाय और कौन हो सकता है? अथवा महाराज छत्रसाल की प्रशंसा करता हूँ आप दोनों ही मेरे लिये एक आदर्श हैं।

विशेष

1. कवि ने छत्रपति शिवाजी और महाराज छत्रसाल के शौर्य को अद्वितीय बताया है।
2. प्रस्तुत अंश में अनुप्रास, काव्यलिंग और अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

7.2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

7.2.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 कवि भूषण का जन्म कब और कहाँ हुआ?
उत्तर – कवि भूषण का जन्म वि.सं. 1670 में उत्तर प्रदेश के तिकवांपुर (त्रिविक्रमपुर) में हुआ था।

प्रश्न 2 कवि भूषण किन–किन राजाओं के आश्रय में रहे?
उत्तर – कवि भूषण छत्रपति शिवाजी, महाराज छत्रसाल, हृदयराम सोलंकी, साहूजी, बाजीराव तथा जयसिंह आदि के आश्रय में रहे थे।

प्रश्न 3 कवि भूषण का अलंकार ग्रन्थ किसे माना गया है?
उत्तर – कवि भूषण का अलंकार ग्रन्थ 'शिवराज भूषण' को माना गया है।

प्रश्न 4 रीतिकाल में राष्ट्रीय चेतना और जातीय स्वतन्त्रता का गायक कवि किसे माना गया है?
उत्तर – कविवर भूषण को माना गया है।

प्रश्न 5 कवि भूषण के बड़े भाई का क्या नाम था?
उत्तर – कवि भूषण के बड़े भाई का नाम चिन्तामणि था।

प्रश्न 6 भूषण की कविताओं में कौन से रस की प्रधानता है?
उत्तर – भूषण की कविताओं में वीररस की प्रधानता है।

प्रश्न 7 भूषण ने अपनी कृति 'शिवा बावनी' में किसका चित्रण किया है?
उत्तर – शिवा बावनी में महाराष्ट्र केसरी छत्रपति शिवाजी के शौर्य का चित्रण किया गया है।

प्रश्न 8 'छत्रसाल दशक' में क्या वर्णित है?
उत्तर – 'छत्रसाल दशक' में कवि भूषण ने बुंदेला राजा छत्रसाल के शौर्य का वर्णन किया है।

प्रश्न 9 कवि भूषण को 'भूषण' की उपाधि किसने दी?
उत्तर – चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद ने कवि को 'भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

प्रश्न 10 'देखत ऊँचाई उधरत पाग, सूधी राह, दीसहु मैं बढै ते जो साहस निकेत है।' कवि ने साहस निकेत किसे माना है।
उत्तर – शिवाजी द्वारा शत्रुओं से छीने गये दुर्गों को उनके साहस के निकेत कहा गया है।

प्रश्न 11 'चाकर है उजर कियो न जा नैक पै, कछु दिन उबरते तो घने काज करते।' प्रस्तुत कथन किसने किससे कहा है।
उत्तर – प्रस्तुत कथन बादशाह औरंगजेब के प्रति उनके वजीर के द्वारा कहा गया है।

प्रश्न 12 'नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती है' शत्रु पक्ष की स्त्रियों की इस दशा का क्या कारण है?
उत्तर – शिवाजी के भय के कारण शत्रु पक्ष की स्त्रियाँ नगरों से भागकर जंगलों में चली गई जिसके कारण उनकी यह दशा हो गई है।

प्रश्न 13 'स्याह मुख नौरंग, सिपाह मुख पियरे' इस कथन से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तर – कवि के अनुसार शिवाजी के क्रोधावेग के कारण बादशाह औरंगजेब और उसके समस्त दरबारियों के चेहरे भय के कारण काले पड़ गये।

प्रश्न 14 'वेद राखे विदित ... स्वधर्म राख्यो घर में' कवित्त में कवि का क्या भाव व्यंजित हुआ है?
उत्तर – प्रस्तुत कवित्त में कवि भूषण ने शिवाजी द्वारा हिन्दु संस्कृति और हिन्दु धर्म की सुरक्षा का भाव व्यक्त किया है।

प्रश्न 15 'भुज भुजगेस की वै ..... वर छीने हैं खलन कै' प्रस्तुत कवित्त में किसका चित्रण किया गया है?
उत्तर – प्रस्तुत कवित्त में कवि ने बुन्देला नरेश छत्रसाल के शौर्य और उनकी बरछी की शत्रु संहार क्षमता का चित्रण किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न 16 'अंग जोति लेवा ते बै है के दाम देवा भूप, सेवा लागे करन महेबा महेबा महिपाल की।' कवि के अनुसार राज महेबा नरेश छत्रसाल की सेवा क्यों करने लगे?

उत्तर – बादशाह औरंगजेब से भयभीत होकर अपनी रक्षा के निमित्त राव राजा महेबा नरेश छत्रसाल की सेवा करने लग गये।

प्रश्न 17 'वेद राखे विदित, पुरान राखे सार युत' कवित्त में छत्रपति शिवाजी की क्या विशेषता बताई है?

उत्तर – प्रस्तुत कवित्त में शिवाजी की धर्मवीरता और जातीय स्वाभिमानी प्रवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न 18 'जाहि के प्रताप ते मलिन आफताब होत।' कवि भूषण ने किसका प्रताप बताया है?

उत्तर – छत्रपति शिवाजी और महेबा नरेश छत्रसाल का ऐसा प्रताप वर्णित किया है।

प्रश्न 19 'ऊँचे घोर मन्दर के रहन बारी, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।' 'मन्दर' शब्द का श्लेषार्थ क्या है?

उत्तर – 'भव्य महल' और 'पर्वत गुफाएँ' हैं।

प्रश्न 20 कवि भूषण की कौन–कौन सी रचनाएँ आज अनुपलब्ध हैं?

उत्तर – 'भूषण उल्लास', 'भूषण हजारा' और 'भूषण उल्लास' रचनाएँ अनुपलब्ध हैं।

7.2.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 'और राव राजा एक मन मैं न लाऊँ अब' इस कथन के अनुसार कवि भूषण अन्य राजा व राव से अप्रसन्न क्यों थे?

उत्तर – कवि भूषण भारतीय संस्कृति के प्रति पूर्णतः आस्था से युक्त थे तथा जातीयता तथा हिन्दुत्व की भावना के साथ राष्ट्रीय चेतना का भाव प्रबल रूप में था। उस समय मुगल बादशाह और उसके अधीनस्थ नवाब धार्मिक उन्माद से ग्रस्त थे तथा औरंगजेब के मन में हिन्दुओं के प्रति घृणा थी। वह हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार किया करता था सभी हिन्दु उसके क्रूर व्यवहार से आक्रान्त थे। उनसे मनमाना कर वसूल किया जाता था। इन सबके बाद भी छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल को छोड़कर सभी राजा–राव औरंगजेब के अनुयायी थे और वे हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों को मूकदर्शक की भाँति देखते रहते थे। यद्यपि वे संगठित होकर मुगल सम्राट की नीतियों का विरोध कर सकते थे किन्तु अपने सुख विलास के कारण उन्होंने किसी प्रकार से मुगलों का विरोध नहीं किया। कवि भूषण ने उन सभी राव–राजाओं की उस डरपोक व स्वार्थी नीतियों पर आरोप करते हुए अपने क्षोभ को व्यक्त किया है।

कवि भूषण ऐसे राजाओं के आश्रय में रहना चाहते थे जो भारतीय संस्कृति का संरक्षण और हिन्दुत्व का पूर्ण समर्थन कर सके। उस समय छत्रपति शिवाजी और बुन्देला के राजा छत्रसाल ऐसे ही वीर राजा थे जो उस समय औरंगजेब का विरोध कर रहे थे। शिवाजी ने अनेक बार उस औरंगजेब की सेना का मुकाबला किया था और उन्हें अनेक प्रकार की चुनौतियाँ दे चुके थे। शिवाजी भारतीयता के कट्टर समर्थक थे। यदि अन्य राजा शिवाजी का साथ देते तो हिन्दुओं पर किसी प्रकार के अत्याचार नहीं होते। कवि भूषण इसी तथ्य को सामने रखते हुए अन्य राजाओं को अपने तरीके से धिक्कारा है और वे कहते हैं कि छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल नरेश की वीरता, हिन्दुत्व–गरिमा तथा राष्ट्रीय चेतना की ओजस्वी शब्दों में प्रशंसा की है – उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा– 'साहू को सराहौ कै सराहो छत्रसाल को।'

प्रश्न 2 भूषण की काव्यगत प्रवृत्तियों को संक्षिप्त में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में जब एक ओर श्रृंगार–चित्रण एवं आचार्यत्व के निर्वाह की परम्परा चल रही थी वहीं दूसरी ओर भूषण एक अकेले ऐसे कवि थे जो सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्रीय चेतना और जातीय ओजस्व स्वर में अपना उद्घोष कर रहे थे। यद्यपि रीतिकालीन प्रभाव के कारण भूषण ने भी स्वयं आचार्यत्व का अनुसरण करना चाहा और रीतिबद्धता का आग्रह रखा फिर भी उनका झुकाव शौर्य–चेतना के चित्रण की ओर अधिक रहा। भूषण के काव्य का भाव पक्ष ओजस्वी भावों से ओत–प्रोत रहा। इस कारण उनके काव्य का प्रमुख रस वीररस रहा है। युद्ध, दया, दान और धर्म ये चारों भेद उनके वीर रस में विद्यमान थे। उन्होंने शिवाजी के शौर्य और संत्रस्त शत्रु नारियों के चित्रण में भयानक रस का अच्छा प्रयोग किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भूषण के काव्य में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था का स्वर प्रखरता से व्यक्त हुआ है। औरंगजेब भारतीय सस्कृति एवं हिन्दु धर्म का विरोधी था। कवि भूषण ने वीर शिवाजी और छत्रसाल के द्वारा औरगजेब का विरोध किये जाने की प्रशंसा की और उनका समर्थन किया। साथ ही कवि भूषण ने शाहजहाँ की नीतियों का समर्थन किया क्योंकि उसकी नीतियों में न्याय था तथा हिन्दुओं व भारतीय संस्कृति के प्रति किसी प्रकार की कट्टरता नहीं थी। कुछ आलोचक कवि भूषण को सम्प्रदायवादी मानते थे किन्तु उस समय मुगल शासकों के क्रूर आचरण को लेकर भूषण ने विरोध व्यक्त किया। जो पूर्णतया राष्ट्रीयता से मण्डित था। भूषण के काव्य का भाव पक्ष जितना ओजस्व है उतना ही उनका कला पक्ष भी प्रखर रहा है। भूषण ने ब्रज भाषा में काव्य का सृजन किया और पद योजना को भावों के अनुरूप रखा। वीर रस के ही अनुकूल कवित्त छन्द को अपनी कृति का सहारा बनाया। उपमानों और प्रतीकों का सुन्दर विन्यास तथा अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग उनके काव्य की अन्यतम विशेषता है।

7.2.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 भूषण के काव्य में कला पक्ष एवं भाव पक्ष की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

उत्तर – हिन्दी साहित्य का रीतिकाल जहाँ एक ओर श्रृंगार, वासना, नग्नता तथा रूपासक्ति का स्पर्श पाकर प्रेम के रूप में परवान चढ़ा हुआ था वहीं दूसरी ओर उस युग के कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी सौन्दर्य की ही अभिव्यक्ति की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए थे। उस समय में भारतीय जनता और समाज की जो दयनीय स्थिति थी, उसके लिये किसी भी कवि के कण्ठ से सहानुभूति के स्वर नहीं निकले थे बल्कि प्रत्येक कवि राजाश्रय प्राप्त कर आश्रयदाताओं के श्रृंगार–विलास के मनोरंजनार्थ रचनाओं का सृजन करने में व्यस्त थे। उस समय काव्य का उद्देश्य राजा, महाराजाओं, सामन्तों, जमींदारों के मानस को श्रृंगार विलास के लिये उद्दीप्त करना था। अधिकतर कवि अपने आचार्यत्व की प्रतिष्ठा के लिये अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन कर रहे थे। अतः सभी कवि राष्ट्रप्रेम और संस्कृति का गौरव भुलाकर विलासिता में डूबे हुए थे।

रीतिकालीन कवि होते हुए भी कवि भूषण पर अपने समकालीन कवियों का पूर्णतः प्रभाव नहीं पड़ा था। यद्यपि ये श्रृंगार विलासिता की अपेक्षा शौर्य–चेतना को अधिक महत्व देते थे किन्तु उन्होंने रीतिकालीन शास्त्रीय मान्यताओं का सर्वथा विरोध नहीं किया था। अन्य कवियों की तरह उन्होंने भी राज्याश्रय प्राप्त किया और राज दरबारों की चकाचौंध से भी उन्होंने साक्षात्कार किया किन्तु वे उन राजा महाराजाओं के आश्रय में नहीं रहे जो हिन्दू संस्कृति से घृणा करते हों। विशेष बात तो यह रही कि कवि भूषण कुछ समय तक राजा औरंगजेब के आश्रय में भी रहे किन्तु उसकी राष्ट्र विरोधी नीतियों से खिन्न होकर छत्रसाल तथा शिवाजी के आश्रय में आ गये।

कवि भूषण के नाम के संदर्भ में कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ। 'भूषण' तो एक विशिष्ट उपाधि है जिसे चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद्र ने उनके सम्मान में प्रदान की, स्वयं भूषण ने इस तथ्य को स्पष्ट किया है–

'कुल सुलंकी चित्रकूटपति साहस शील समुद्र।
कवि 'भूषण' पदवी दई हृदयराम सुत रूद्र।।'

कवि भूषण को पौरुष और ओज का कवि माना जाता है। 'शिवराज भूषण' 'शिवा बावनी' और 'छत्रसाल दशक' उनकी उपलब्ध रचनाएँ हैं। 'शिवराज भूषण' उनकी अलंकार ग्रन्थ हैं। जिसमें रीतिशास्त्रीय मान्यतानुसार प्रथम लक्षण और वाद में अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। वस्तुतः भूषण आचार्यत्व के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते थे किन्तु कोरी अलंकारवादिता की अपेक्षा उनका कवित्व अधिक प्रबल रहा। उन्होंने विविध अलंकारों के उदाहरण रूप में शिवजी के व्यक्तित्व का चित्रांकन किया। इस रचना में इसी प्रकार अलंकार विवेचन गौण हो गया तथा वीरदर्पपूर्ण चरित्र प्रधान हो गया। अतः यह रचना अलंकार–काव्य न होकर वीर–काव्य बन गई। इनकी अन्य रचनाओं में भी वीरता एवं ओजस्विता के दर्शन होते हैं। इसी कारण भूषण को वीररस का सिद्ध कवि माना जाता है।

काव्यगत विशेषताएँ

रीतिकालीन अन्य कवियों की तरह भूषण में मौलिकता एवं नवीन चेतना का स्वर दिखाई देता है। इस कारण इनके काव्य का भाव पक्ष जितना ओजस्वी रहा है उतना ही प्रशंस्य और अलंकृत है।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भाव पक्ष

1. रस योजना – कवि भूषण के काव्य में वीर रस का ओजस्वी उन्मेष समाहित है। काव्यशास्त्र में वीर रस के मुख्य चार भेद – युद्धवीर, दानवीर, दयावीर और धर्मवीर। भूषण ने इन चारों प्रकार के वीरों का चित्रण अपने काव्य में किया है किन्तु उनका विशेष रूझान युद्धवीर वर्णन की ओर अधिक रहा जो कि अत्यन्त ही ओजस्वी और चमत्कारपूर्ण रहा है। इसके अन्तर्गत चतुरंगी सेना के वीरतापूर्ण कार्यों और वीरों की दर्पोक्ति, उनके शस्त्रास्त्र संचालन एवं युद्ध कौशल का सजीव चित्रण करने में भूषण पूर्णतः सफल रहे हैं–

'भूषण भनत तेरी हिम्मत कहाँ लौ कहौ,
किम्मति यहाँ लगी है जाकी भट झोट मैं।
ताव दै दै मूछन कंगुरन पै पाँव दै दै,
अरि मुख घाव दै दै कूदि परै कोट मैं।।'
'कोप करि चढ्यो महाराज सिवराज वीर,
धौंसा की धुकार ते पहार दरकत है।
गिरे कुम्भि मतवारे स्त्रोनित कुहारे छूटे,
कडाकड छवि नाल लाखों थरकत है।।'

युद्धवीर के अतिरिक्त भूषण ने दयावीर, दानवीर तथा धर्मवीर रस का वर्णन भी बड़ी चारुता एवं उत्कृष्टता से किया गया है। भूषण ने वीभत्स, रौद्र और भयानक रस का सुन्दर उन्मेष किया गया है–

'उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै पग,
तेउ सगबग निस–दिन चली जाती है।
अति अकुलाती मुरझाती न छुपाती गात,
बात न सुहाती बोल अति अनखाती है।।'

2. सांस्कृतिक आस्था – भूषण के काव्य में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था का स्वर प्रखरता से व्यक्त किया गया है। उस समय में जिन–जिन राजाओं ने अपनी संस्कृति का अनुसरण नहीं किया अथवा औरंगजेब ने जिस तरह भारतीय संस्कृति को अत्याचारपूर्वक नष्ट करने का प्रयास किया, उसका विरोध करते हुए भूषण ने अपनी निष्ठा व्यक्त की और हिन्दुत्व के संरक्षण के लिये शिवाजी के कार्यों का पूर्णतया समर्थन किया था। भूषण ने अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए –

'आपस की फूट ही ते सारे हिन्दुवान टूटे,
टूट्यो कुल राबन अनीति अति करते।'
'वेद राखे विदित पुरान राखे सारयुत,
राम नाम राख्यौ आनि रसना सुघर मैं।
हिन्दुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे मैं जनेउ राख्यो माला राखी गर मैं।'

3. राष्ट्रीय चेतना – आधुनिक समालोचक भूषण को सम्प्रदायवादी तथा संकुचित जातीय विचारधारा वाला कवि कहते हैं। उनके अनुसार भूषण ने एक राज्य विशेष की प्रतिष्ठा के लिये और हिन्दुत्व की भावना से अन्य राजाओं की आलोचना की और औरंगजेब तथा मुसलमानों के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न किये। मुगल सम्राट औरंगजेब हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार करता था। उन पर मनमाने ढंग से अनेक प्रकार के कर लेता था। जबरन धर्म परिवर्तन के लिये लोगों को मजबूर करता था। कवि भूषण ने हिन्दु समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीयता का जो प्रबल समर्थन किया वह अपने आप में एक स्थान रखता है। भारतीय संस्कृति के उन्नायक रूप में छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल की जो प्रशंसा की वह उनकी राष्ट्रीय चेतना की परिचायक कही जा सकती है। कवि भूषण सभी राजाओं में एकता स्थापित करना चाहते थे, इसी भाव को प्रकट करते हुए उन्होंने उद्घोष किया कि –

'आपस की फूट ही ते सारे हिन्दुवान टूटे।'

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भूषण ने शिवाजी के हिन्दुत्व का संरक्षण प्राप्त किया और उसे स्वीकार किया। वैसे उन्होंने अकबर, शाहजहाँ, जहाँगीर आदि के न्यायप्रिय शासन की प्रशसा भी की है। कवि भूषण ने अश्लील श्रृगार का चित्रण न करके जनता को अन्याय, आतंक और कुशासन का सामना करने की प्रेरणा प्रदान की। इस प्रकार कवि भूषण के काव्य का भाव पक्ष अत्यन्त आकर्षक और प्रभावपूर्ण रहा है।

कलापक्ष

1. भाषा सौष्ठव – कवि भूषण का काव्य ओजस्वी भावों से युक्त है। यद्यपि उन्होंने अपना सृजन कार्य ब्रज भाषा में किया है, तथापि उसमें अरबी, उर्दू, फारसी भाषा के अति प्रचलित शब्दों का पर्याप्त प्रयोग किया है। वीर रस के अनुसार ही शब्दों का चयन किया है। इस वजह से कहीं पर वचन वक्रता से युक्त भाषा का प्रयोग हुआ है। ओजस्वी भावों की अभिव्यक्ति के लिये उचित शब्दों का प्रयोग हुआ है तो नाद सौन्दर्य का पूरा–पूरा ख्याल रखा गया है –

'कलजुग जलधि अपार उद्द अधरम उम्मिमय,
लच्छ निलच्छ मलिच्छकच्छ अरु मच्छ मगरचय।
नृपति नदी–नद–वृन्द होत जाको मिली नीरस,
मनि भूषण सब भुग्गि धोरि किन्निय सुअप्प बस।।'

2. अलंकार योजना – कवि भूषण ने 'शिवराज भूषण' में शब्दगत तथा अर्थगत अलंकारों का निरूपण किया है, जिनकी संख्या 105 है। इस प्रकार उन्होंने शिवाजी के चित्रांकन में प्रायः सभी अलंकारों का प्रयोग किया है जिनमें प्रमुख रूप से उत्प्रेक्षा, रूपक, दीपक, व्यतिरेक, आक्षेप, अतिशयोक्ति, उपमा, यमक, श्लेष, विषम, निदर्शना आदि को अपनाया है –

'ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन बारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।
कन्द मूल भोग करै, कन्द मूल भोग करैं,
तीन बेर खाती थी ते तीन बेर खाती हैं।।'

इसी प्रकार रूपक अलंकार का रोचक प्रयोग किया गया है –

'तजत मिलिन्दि जैसे–तैसे दूर भाज्यो,
अलि अवरंगजेब चम्पा सिव राज है।'

3. छन्द योजना – कवि भूषण की ओज गुण की ओजस्वी अभिव्यक्ति के लिये छन्दों की विशेषतया गेयता, नादात्मकता एवं पद योजना अत्यन्त प्रशंसनीय है। उसमें ओजगुण का पूर्ण समावेश किया गया है। भूषण ने सवैया तथा दोहा छन्द का प्रयोग किया। यथा

'शिव सरजा के बर को यह फल आलमशीर।
छूटे तेरे गढ सबै, कूटे गये मजीर।।'

4. उपमान–प्रतीक विधान – कवि भूषण ने वीर शिवाजी व बुन्देला राजा छत्रसाल के पराक्रम के वर्णन के लिये पौराणिक उपाख्यानों से उपमान और प्रतीक चुने हैं। वस्तुतः भूषण अपने इन दोनों आश्रयदाताओं को हिन्दुत्व की रक्षा करने हेतु वीरत्व का अवतार मानते हैं। इसलिये उन्होंने पौराणिक प्रसंगों को उपमान के रूप में प्रयुक्त कर ओजस्वी भावों तथा दृश्य–बिम्बों की सर्जना की। यथा–

'दारुन दुगुन दुरजोधन ते अबरंग,
भूषण भनत जग राख्यो छल मढि कै।
धरम–धरम, बल भीम पैज अरजुन,
नकुल अकिल सहदेव पैज चढि कै।।
साही के शिवाजी गाजी करयो दिल्ली माहि चण्ड,
पाण्डवन हूँ ते पुरुषारथ सुबदि कै।
सूने लाख मौन ते कढै वै पाँच राति मैं जू,
धौंस लाख चौकी ते अकेले आयो कढि कै।'

इस प्रकार भूषण ने प्रतीकों, बिम्बों तथा उपमानों की सुन्दर योजना करके सशक्त भाव सम्प्रेषण किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

निष्कर्ष

भूषण रीतिकालीन विलासिता एवं श्रृंगार के वातावरण में रहते हुए भी वीर भावों के कवि थे। उनके काव्य में वीर रस के साथ ही रौद्र, वीभत्व और भयानक रस का सुन्दर परिपाक हुआ है। राष्ट्रप्रेम, हिन्दुत्व की चेतना, भारतीय संस्कृति का गौरव तथा राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में व्यक्त इनके विचार अत्यन्त ओजस्व रहा है। भूषण का कला पक्ष पर्याप्त समृद्ध और सशक्त भावाभिव्यक्ति से मण्डित है।

प्रश्न 2 'रीतिकालीन अति श्रृंगारिकता के मध्य भूषण की कविता जीवन का जयघोष है।' स्पष्ट कीजिये।

अथवा

'रीतिकालीन कवियों में भूषण सबसे अलग और उच्च स्थान पर स्थित है।' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – कविवर भूषण का आविर्भाव रीतिकाल में हुआ था जिसमें लक्षण ग्रन्थों के निर्माण और श्रृंगार वर्णन की प्रवृत्तियां परिलक्षित होती थी किन्तु कवि भूषण ने इस प्रवृत्ति को आंशिक रूप में ही अपनाया था। उन्होंने श्रृंगार के वासनामय चित्रों की अपेक्षा वीर रस की ओजस्वी वाणी मुखरित हुई। कवि भूषण ने रीतिकालीन परिस्थितियों को बदलने का प्रयास किया। उन्होंने लक्षण ग्रन्थों की रचना को अपने काव्य में स्थान दिया, जिसकी वजह से उन्हें रीतिकाल में उत्पन्न वीर कवि माना जाता है। उस समय के कवि प्रायः कवि और आचार्य रूप में प्रतिष्ठित रहे। यद्यपि कवि घनानन्द और बिहारी जैसे कवि अपवादस्वरूप भी इस काल की महान हस्तियाँ हैं जिन्होंने केवल अपने कवि कर्म को ही अपनाया और आचार्यत्व प्रकट नहीं किया। केशव, भिखारीदास और चिन्तामणि जैसे कवियों ने कवित्व और आचार्यत्व दोनों का ही निर्वाह किया। कवि भूषण की गणना भी ऐसे ही आचार्य कार्य के रूप में की जाती है। जहाँ उन्होंने एक ओर 'शिवाबावरी' और 'छत्रसाल शतक' जैसी वीररस पूर्ण ओजस्वी काव्य कृतियों की रचना की और दूसरी ओर 'शिवराज भूषण' जैसे अलंकार ग्रन्थ की रचना की और आचार्यत्व की परम्परा का निर्वाह किया।

कवि भूषण और उनका आचार्यत्व

यद्यपि कविवर भूषण को आचार्यत्व में अधिक सफलता नहीं मिली क्योंकि उनमें आचार्यत्व का गाम्भीर्य एवं सूक्ष्म विवेचना का उतना आग्रह दिखाई नहीं देता है। उन्होंने 'शिवराज भूषण' में रस शब्द शक्ति, नायिका भेद आदि की पूर्ण उपेक्षा की है। रीतिकालीन प्रमुख प्रवृत्ति के दो–चार छन्द अवश्य उनके द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं। इस प्रकार उन्होंने रीति ग्रन्थों की रचना को अलंकारों की ही विवेचना की है तथा काव्य प्रणयन की दृष्टि से उनको पर्याप्त सफलता प्रापत हुई। इन सबकी वजह से कवि भूषण रीतिकालीन कवियों में सबसे अलग माने जाते हैं।

आचार्य भूषण तथा कवित्व की ओजस्विता

'शिवा बावनी' तथा 'छत्रसालदशक' में भूषण की प्रतिभा का ओजस्वी स्वर मुखरित हुआ है। 'शिवा बावनी' में भूषण ने महाराज शिवाजी के शौर्य से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का मनोहारी वर्णन किया है। इस काव्य में उन्होंने मुक्तक काव्य की संक्षिप्त प्रणाली को अपनाते हुए जिस विस्तीर्ण भाव परम्परा को प्रत्येक पद में समाहित किया है, वह निश्चय ही हिन्दी के वीर काव्य में अत्यन्त कम ही प्राप्त होती है। छत्रसाल–दशक में उन्होंने बुन्देला नरेश छत्रसाल की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

यह तथ्य भी सत्य है कि रीतिकालीन काव्य की मूल ध्वनि श्रृंगारपरक थी और कालक्रम की दृष्टि से भूषण उसी युग के कवि थे। किन्तु उनका वर्ण्य विषय उनके युगीन साहित्य से सर्वथा पृथक रहा है। उनकी आत्म वृत्तियाँ श्रृंगार रस की आकर्षक सारणियों में प्रवाहित होने की अपेक्षा वीर रस के ओजस्वी स्रोत से एक रूप होने के लिये अधिक उन्मुख रहती हैं। कवि भूषण एक चेतन और सजीव वातावरण की अनुभूति पाते थे और यह उसी का परिणम था कि उनके काव्य में वीररस की आत्मा इतनी सजीव रुप में साकार हो सकी। वीररस विषयक भावों की आयोजना करते–करते उन्होंने विशेष तन्मयता का आश्रय लिया और अपने लक्ष्य में सम्पूर्ण सफलता प्राप्त की। वीररस का 'उत्साह' स्थायी भाव उनके काव्य में प्रवाह से अन्त तक व्याप्त रहा। भावना के इस विशेष प्रवाह की सिद्धि के लिये उन्होंने काव्य तत्त्वों से भी पर्याप्त सहयोग प्राप्त किया है। इस प्रकार कवि भूषण ने तत्कालीन सामाजिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए काव्य का सृजन किया। उस काल में भक्ति और शौर्य के प्रति आस्था अत्यन्त कम रह गई थी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भूषण ने हिन्दु जाति में जागरण का मंत्र फूंक कर सुषुप्त समाज को जागृत कर उसे राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख किया। इस दृष्टि से वे एक नवीन धारा के प्रवर्तक थे। यद्यपि उन्होंने अपने काल की श्रृंगारिक परम्परा की तरह अपने आश्रयदाता का ऊहात्मक वर्णन भी किया है, वे इस अति रंजना से बच नहीं सके फिर भी उन्होंने अपने काव्य कौशल पर बल देकर प्राचीन वीर काव्य परम्परा को पुनर्जन्म देने का प्रयास किया।

भूषण राष्ट्रीयता के गायक के रूप में

आचार्य कवि भूषण का व्यक्तित्व जातीय स्वतंत्रता और राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत रहा, जिसकी वजह से उन्हें सर्वप्रथम राष्ट्रकवि माना जाता है। कुछ लोग भूषण को संकुचित दृष्टिकोण वाला जातीय कवि मानते हैं। उनका मत है कि भूषण ने सारे भारत देश का ध्यान न रखकर केवल अपने आश्रयदाताओं के शौर्य एवं स्वातन्त्र्य भाव का चित्रण किया है। इस कारण आलोचक भूषण को विद्वेषपूर्ण एवं राष्ट्रीय भावना से रहित मानते हैं तथा उनके दृष्टिकोण को हिन्दु–मुसलमानों में घृणा फैलाने वाला मानते हैं। कवि भूषण के काल में एक राज्य विशेष ही राष्ट्र या तथा भारत की हिन्दु जनता मुगलों को ही आक्रान्त मानती थी। वे जबरदस्ती लोगों को धर्म परिवर्तन के लिये बाध्य करते थे। मन्दिरों की तोड़–फोड़ करते थे तथा राजपूत राजाओं में उनके प्रति आक्रोष था। कवि भूषण ने अपने युग के हिन्दुओं की उस भावना का प्रतिनिधित्व न करके स्वातन्त्र्य–भावना का स्वर मुखरित किया, इसलिये भूषण को प्रथम राष्ट्रीय कवि मान लेना उचित होगा। रीतिकाल के अन्य कवि अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग करके वासना का चित्रण करते थे, अपने आश्रयदाताओं की रतिक्रीड़ा का चित्रण करने में अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते थे और आवाम के कष्टों की ओर उनका जरा–सा भी ध्यान नहीं गया। इस विशेषता के कारण भी कविवर भूषण रीतिकाल के कवियों से अलग और उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित दिखाई देते हैं। कविवर भूषण ने अपने काव्य में ऐसे योद्धाओं की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया है जो वस्तुतः जातीय एवं राष्ट्रीय चेतना के ज्वलन्त प्रतीक थे। स्वतंत्रता एवं धर्मप्रियता के लिये किया गया उनका त्याग उस काल के लिये राष्ट्रीय प्रेरणा का कार्य था। भूषण ने उस चेतना और प्रेरणा को ओजस्विता प्रदान की तथ अन्याय के विरूद्ध लड़ने वाले अपने काव्य–नायक के शौर्य का बखानकर हिन्दु जनता की दमित भावनाओं एवं स्वाभिमान को व्यक्त करने का प्रयास किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भूषण की इन विशेषताओं के लिये लिखा है – 'भूषण ने जिन दो नायकों की कीर्ति को अपने काव्य का विषय बनाया, वे अन्याय–दमन में तत्पर हिन्दु धर्म के संरक्षक दो इतिहास प्रसिद्ध वीर थे। उनके प्रति भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिन्दु जनता के ह्रदय में उस समय भी थी और आगे भी बनी रही या बढती चली गई। इसी से भूषण के वीर रस के उदगार सारी जनता के ह्रदय की सम्पत्ति हुए। भूषण की कविता कवि–कीर्ति–सम्बन्धी एक अविचल सत्य का दृष्टान्त है। जिस कवि की रचना को जनता के ह्रदय स्वीकार करेंगे, उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी, जब तक सृष्टि बनी रहेगी।'

मौलिक चेतना के उन्नायक कवि भूषण

रीतिकाल के अन्य कवियों की अपेक्षा भूषण में मौलिक चेतना के दर्शन होते हैं। भूषण ने एक ओर अपने युग से प्रायः विभिन्न उपादनों को स्वीकार किया है तो दूसरी ओर काव्य के कलापक्ष में भी उनके नवीन प्रयोग किये हैं। यद्यपि अन्य रीतिवादी कवियों की तरह उन्होंने भी काव्य की प्रबन्ध–विधा को न अपनाकर उसकी मुक्तक शैली को ही विकास की ओर अग्रसर किया है तथापि इस क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी मौलिक चेतना का सफल परिचय दिया है। साहित्यशास्त्रियों ने काव्य–सौष्ठव की वृद्धि के लिये अलंकारों को आवश्यक माना किन्तु अतिशयता से काव्य में सहज–सौन्दर्य नहीं हो पाता है। यदि कवि उचित समावेश कर सके तो अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाने में अहम् भूमिका अदा करते हैं। रीतिवादी कवियों ने अपने काव्यों को अलंकार–चमत्कार से आवृत्त करने की भरसक चेष्टा की। इस कारण उनके काव्य में पाण्डित्य–प्रदर्शन एवं उक्ति–वैचित्र्य की प्रवृत्ति दिखाई देती थी। वे अलंकारों को साध्य मानने लगे थे, किन्तु भूषण में पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर अलंकारों को साधन और काव्य को साध्य माना। यही कारण है कि अधिकांश रीतिकालीन उन्मीलन की ओर उन्मुख न होकर परिवर्धन की ओर अग्रसर रहा। इस प्रकार एक ओर वे चमत्कार उत्पन्न करने में सफल रहे हैं तो दूसरी ओर उन्होंने भाव–चारुत्व को भी पर्याप्त गति प्रदान की है। इस प्रकार उनके छन्दों का भी आवश्यकतानुसार और रसानुकूल प्रयोग हुआ है तथा भाव सम्प्रेषण की तीव्रता को अपने काव्य में तीव्रता प्रदान की है। इस प्रकार से रीतिकालीन कवियों में भूषण को एक अलग स्थान प्राप्त हुआ है।

7.3 सारांश

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि कवि भूषण ने अपनी काव्य साधना के द्वारा रीतिकाल की रूढिबद्ध कविता में एक नवीन चेतना का संचार किया है। उनके काव्य की ओजस्वी वाणी से कायर के हृदय में भी शौर्य की उद्‌भावना एवं नवीन उत्साह का संचार हो जाता है। उन्होंने अपने काव्य में भावपक्ष एवं कलापक्ष को समृद्ध करने के समय वीरगाथा काल की चारणी शैली को ग्रहण करते हुए भी जिस स्वतंत्रता, मौलिकता, राष्ट्रीयता, त्याग तथा चारित्रिक दृढता का परिचय दिया है, यह निश्चय ही अति प्रशंसनीय है। भूषण ने तत्कालीन काव्य–परम्पराओं को बदलने का सफलतम प्रयास किया है जिसका प्रभाव आधुनिक काल के कवियों पर भी पड़ा। अतः कवि भूषण का स्थान रीतिकालीन अन्य कवियों में अन्यतम रहा है।

7.4 अभ्यास प्रश्नावली

1. भूषण के काव्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. रीतिकाल में भूषण एक अलग कवि थे, सिद्ध कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun